Result Mitra Daily Current Affairs

सिखों के पवित्र निशान साहिब के रंग में बदलाव

❖ हालिया संदर्भ :

- अगस्त महीने की शुरूआत में 9 अगस्त को शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधन समिति (SGPC) में स्वर्ण मंदिर (अमृतसर) के परिसर में स्थित "अकाल तख्त" के सामने दो प्रतिष्ठित "निशान साहिब" का रंग "केसरी" (भगवा) से बदलकर "बसंती" कर दिया है।
- बसंती देश बसंत ऋतु से जुडा चमकीला पीला रंग है जो पंजाब में ऐतिहासिक रूप से अपना सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रखता है।
- सर्वप्रथम 4 अगस्त को पंजाब (पाकिस्तान) के कपूरथला जिले के सुल्तानपुर लोधी में स्थित ऐतिहासिक गुरू द्वारा "बेर साहिब" में सबसे पहले "निशान साहिब" का रंग केसरी से बदलकर बसंती कर दिया गया।
- इस प्रकार पंजाब में "बेर साहिब" गुरूद्वारा "निशान साहिब" का रंग केसरी से बदलकर बसंती करने वाला पहला गुरूद्वारा बन गया।
- "निशान साहिब" सिखों का पवित्र धार्मिक ध्वज है, जो हर गुरूद्वारे पर फहराता है।
- शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधन समिति (SGPC) के अधिकारियों के अनुसार पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं चंडीगढ के सभी गुरूद्वारे में SGPC द्वारा "निशान साहिब" के रंग बदलने की प्रक्रिया चल रही है।

Result Mitra

- इसके अलावा दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति (DSGMC) जो दिल्ली में गुरुद्वारों का प्रबंधन करती है, के द्वारा भी दिल्ली के सभी गुरुद्वारों के "निशान साहिब" का रंग केसरी से बसंती करने के लिये SGPC के नेतृत्व का पालन कर सकती है।

❖ केसरी से बसंती :

- अधिकांश गुरुद्वारा के 'निशान साहिब का रंग' SGPC गुरुद्वारों में हालिया बदलाव से पहले 'केसरी' हुआ करता था।
- केसरी भगवा रंग का होता है जो राजनीतिक पार्टी शिरोमणि अकाली दल के झंडे के समान था।
- हालांकि इससे पहले वर्ष 2020 में मोहाली के "गुरुद्वारा सच्चा धन साहिब" का "निशान साहिब" का रंग बदलकर केसरी से बसंती कर दिया गया था।
- "गुरुद्वारा सच्चा धन साहिब" के "निशान साहिब" का रंग केसरी से बसंती करने पर वर्ष 2022 में अकाल तख्त के जत्थेदार ने एसीजीपीसी को पत्र लिखकर "निशान साहिब" के रंग को लेकर उत्पन्न भ्रम की स्थिति से निपटने के लिये आधिकारिक सिख आचार संहिता (रेहत मर्यादा) के अनुसार "निशान साहिब" का रंग तय करने के लिये कहा गया।
- आधिकारिक सिख आचार संहिता (रेहत मर्यादा) में "निशान साहिब" के रंग को लेकर जैंथिक (पीला रंग से संबंधित) और भूरा नीला रंग का उल्लेख किया गया है।
- हालांकि इस आचार संहिता में केसरी और बसंती दोनों रंगों को पीले रंग के शेड के रूप में माना गया है।
- 'केसरी' जिसका उपयोग हिंदू धर्म के भगवा झंडा के रूप में उपयोग किया जाता है का उपयोग अधिकांश गुरुद्वारे में किया जाता रहा है जबकि सिख समुदाय के निहंग संप्रदाय द्वारा नीले "निशान साहिब" का उपयोग किया जाता रहा है।

❖ निशान साहिब के रंग को लेकर ऐतिहासिक बहस :

- वर्ष 1955 के एसजीपीसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एक लेख के अनुसार निशान साहिब के केसरी और बसंती रंगों को लेकर बहस स्वतंत्रता पूर्व से ही चली आ रही है।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान जब भारतीय राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) के रंगों को लेकर बहस चल रही थी उस समय अकाली नेता चाहते थे कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रंगों में सिख रंग 'बसंती' को शामिल किया जाना चाहिये।
- वर्ष 1931 में भगवा (केसरी) भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के तीन रंगों में एक बन गया हालांकि तात्कालीन एसजीपीसी अध्यक्ष मास्टर तारा सिंह भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में 'केसरी रंग' से सहमत दिखे लेकिन पूर्व एसजीपीसी अध्यक्ष बाबा खडक सिंह भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में 'बसंती रंग' चाहते थे।
- वर्ष 1936 में आधिकारिक सिख आचार संहिता में यह प्रावधान किया गया कि "निशान साहिब" का रंग या तो जैंथिक (बसंती) या फिर भूरा नीला (सुरमई) रंग का होना चाहिये लेकिन दशकों से केसरी, निशान साहिब के रंगों के रूप में प्रचलन में है।

❖ केसरी प्रतिस्पर्धी रंग का प्रतीक :

- विभिन्न इतिहासकारों के अनुसार पंजाब में "केसरी" रंग की लोकप्रियता अलग खालिस्तान देश की मांग के दौरान बढी।
- खालिस्तान देश के समर्थक जरनैल सिंह भिंडरावाले अक्सर खालिस्तान देश के लिये सिखों को केसरी झंडे के नीचे इकट्ठे होने के लिये आह्वान करते थे।
- अकाल तख्त (स्वर्ण मंदिर) में ऑपरेशन ब्लू स्टार के प्रतिरोध के रूप में सिख समुदाय केसरी रंग के झंडे का उपयोग करते थे।
- वर्ष 1984 (इंदिरा गांधी की हत्या के बाद) पुलिस द्वारा अक्सर केसरी पगडी या दुपट्टा पहनने वाले किसी भी व्यक्ति को खालिस्तानी उग्रवादी के समर्थक के रूप में संदेह की दृष्टि से देखती थी।
- खालिस्तानी उग्रवादी का समर्थन करने वाले कई गीतों में "केसरी" रंग का उल्लेख किया गया है।

❖ सिखों का हिंदु परंपरा के साथ अधिक लगाव :

- 18वीं सदी के दौरान सिखों का खासकर उदासी और निर्मला संप्रदाय का हिंदु परंपराओं के साथ अधिक जुडाव था।
- ऐसा माना जाता है कि सिखों में केसरी रंग का प्रसार हिंदुओं के भगवा रंग से प्रेरित होकर हुआ।
- हालांकि सिखों द्वारा उपयोग किया जाने वाला केसरी रंग भगवा से कुछ भिन्न था।
- कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सिखों में केसरी रंग का प्रसार तात्कालीन भारतीय संस्कृति में लोकप्रिय हिंदु धर्म के आधिपत्य का परिणाम था।

❖ 1970 और 80 के दशक में "निशान साहिब" के रूप में बसंती रंग का इस्तेमाल :

- 1960 के दशक तक विभिन्न सिख संगठनों का मानना था कि गुरूद्वारों में केसरी "निशान साहिब" का उपयोग गुरूद्वारों पर दक्षिणपंथी हिंदु संस्थाओं के प्रभाव के कारण उपयोग किया जाता रहा।
- तत्पश्चात 1970 के दशक एवं 1980 के दशक में सिख आचार संहिता के अनुसार गुरूद्वारों में बसंती रंग का "निशान साहिब" का उपयोग किया जाने लगा, हालांकि इसके बाद फिर से निशान साहिब के केसरी रंग का उपयोग किया जाने लगा।

❖ पंजाब की राजनीति में रंग :

- बसंती रंग पंजाबियों एवं सिखों के बीच सांस्कृतिक रूप से हमेशा से लोकप्रिय रहा है।
- रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा जेल से लिखा गया गीत "मेरा रंग दे बसंती चोला" भगत सिंह की बहादुरी और बलिदान के रूप में बसंती रंग के जुडाव को दर्शाता है।
- पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान एवं पंजाब के आम आदमी पार्टी के नेता अक्सर 'बसंती पगडी' पहने नजर आते हैं।

TM Result Mitra

- पंजाब के राजनीतिक पार्टी शिरोमणि अकाली दल के झंडा का रंग केसरी है हालांकि पार्टी के नेता नीली पगडी पहनते हैं।
- गुरू गोविंद सिंह के पुत्रों जोरावर सिंह एवं फतेह सिंह के सर्वोच्च बलिदान को याद करते हुए पंजाब कांग्रेस के नेता सफेद पगडी पहनते हैं।

❖ शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधन समिति (SGPC)

- शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधन समिति पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा चंडीगढ के सभी गुरूद्वारों के प्रबंधन के लिये एक जिम्मेदार संगठन है।
- SGPC द्वारा गुरूद्वारों की सुरक्षा, वित्तीय, सुविधा, रखरखाव एवं धार्मिक पहलुओं के प्रबंधन का काम करती है।
- 16 नवम्बर 1920 को अमृतसर में अकाल तख्त के पास 175 सदस्यों वाली समिति का चुनाव किया गया जिसे शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधन समिति नाम दिया गया।

❖ निशान साहिब :

- निशान साहिब जिसे सिख ध्वज भी कहा जाता है, दुनियाभर के सिख समुदाय के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है।
- निशान साहिब एक त्रिकोणीय ध्वज होता है जिसके केन्द्र में एक खंडा होता है।
- निशान साहिब सूती या रेशमी कपडा का बना होता है जिसके अंत में एक लटकर होती है।
- निशान साहिब को 12 अक्टूबर 1936 को सिख आचार संहिता के तहत अपनाया गया था।
- पीला-नारंगी निशान साहिब का डिजाइन गुरू हरगोविंद सिंह द्वारा एवं गहरा नीला निशान का डिजाइन गुरू गोविंद सिंह के द्वारा किया गया था।
- अधिकांश गुरूद्वारे के बाहर एक ऊँचे ध्वजस्तंभ पर "निशान साहिब" फहराया जाता है।
- ध्वज के केन्द्र में खंडा, एक दोधारी तलवार के रूप में दर्शाया जाता है।
- निशान साहिब को सिख समुदाय में बहुत पवित्र माना जाता है जिसे प्रतिवर्ष वैसाखी त्योहार के अवसर पर दूध और पानी से धोया जाता है।

❖ बैर साहिब गुरूद्वारा :

- बैर साहिब गुरूद्वारा पाकिस्तान (पंजाब) में स्थित एक गुरूद्वारा है।
- ऐसा माना जाता है सिख गुरू नानक देव यहाँ बेरी के पेड के नीचे रूके हो और सियालकोट के प्रसिद्ध संत हमजा गौस से मुलाकात की थी।
- यह गुरूद्वारा "नाथा सिंह" द्वारा बनाया गया था जिसे बाबरी मस्जिद विवाद के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया।
- वर्ष 2010 में इस गुरूद्वारे को जीर्णोद्धार के बाद भारतीय तीर्थयात्रियों के लिये खोल दिया गया।

Result Mitra